राजस्थान सरकार
निदेशालय, समेकित बाल विकास सेवाएं
2, जलपथ, गांधी नगर, जयपुर

क्रमांक ए.11(3)पो/मबावि/2003/ जयपुर, दिनांकः

उप निदेशक
महिला एवं बाल विकास विभाग,
समस्त।

बाल विकास परियोजना अधिकारी,
समेकित बाल विकास सेवाएं,
समस्त।

विषय :– दिनांक 1–7 अगस्त, 2014 तक विश्व स्तनपान सप्ताह मनाने के क्रम में।

विभाग के तत्वावधान में भारत सरकार के निर्देशानुसार पूर्व वर्षो की भांति दिनांक 1–7 अगस्त, 2014 तक विश्व स्तनपान सप्ताह मनाया जाना है। इसका उद्देश्य स्तनपान को बढावा, संरक्षण प्रदान करने के लिये जागृति पैदा करना है।

अतः आपको निर्देशित किया जाता है कि आप समस्त कार्यकर्ताओं को सैक्टर बैठकों में विश्व स्तनपान सप्ताह के आयोजन एवं इस दौरान इस तथ्य को उजागर करने हेतु निर्देशित करें कि **" मॉ का दूध ही शिशु के लिए सर्वोत्तम आहार है"** जो नवजात शिशु को प्रथम 6 माह के लिए पौष्टिक आहार सम्बन्धी सभी आवश्यकतायें पूरी करता है, ताकि वे अपने कार्य क्षेत्र में बैठके, प्रचार–प्रसार एवं विचार गोष्ठियों का आयोजन कर सकें। इन बैठकों एवं गोष्ठियों में दी जाने वाली जानकारी में निम्न बातों को भी सम्मिलित करें:–

(1) मां का दूध शिशु के लिए प्रकृति का उपहार है।
(2) जन्म के बाद जितनी जल्दी हो सके मॉ अपने बच्चे को दूध पिलायें।
(3) पहला पीला गाढा (कॉलस्ट्रम) दूध अवश्य पिलायें।
(4) 6 माह तक केवल स्तनपान करायें, फिर स्तनपान के साथ उपरी आहार भी दें। दही, खिचडी, दलिया, मसला हुआ केला।
(5) सामान्य दस्त होने पर भी मॉ बच्चे को बार–बार दूध पिलायें।
(6) बच्चें को मॉ का दूध कम से कम दो साल अथवा जहॉ तक मॉ का दूध बने तब तक अवश्य पिलायें।
(7) भूख लगे तो मॉ का दूध, प्यास लगे तो मॉ का दूध पिलायें।
(8) मां का दूध पीने वाला बच्चा अधिक बुद्विमान होता है तथा उसका बौद्विक स्तर मां का दूध न पीने वाले बच्चे की तुलना में 8 अंक ज्यादा हो सकता है।
(9) स्तनपान से मॉ और बच्चें में भावनात्मक लगाव बढता है।
(10) स्तनपान दो बच्चों के जन्म में दूरी रखता है।
(11) स्तनपान से माता का शरीर सुडौल बनी रहती है तथा अस्थियों की कमजोरी से बचाने में सहायक होता है।
(12) स्तनपान कराने से स्तन कैन्सर और गर्भाशय के कैन्सर की सम्भावना कम होती है।
(13) बोतल से दूध पिलाना बच्चें के लिए हानिकारक है।
(14) स्तनपान से शिशु मृत्यू दर में 13–16 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है।
(15) स्तनपान शिशु को निमोनिया, एजर्ली, अस्थमा, दस्त रोग आदि बीमारियों से बचाता है।

सभी बाल विकास परियोजना अधिकारी/महिला पर्यवेक्षक अपने क्षेत्रों में महिला मण्डल/महिला स्वयं सहायता समूह/मातृ समिति की बैठक एवं संगौष्ठि आयोजित करें एवं मॉ के दूध की उपयोगिता के बारे में समझावें। इस आयोजन की रिपोर्ट निदेशालय में 15 दिवस में आवश्यक रूप से प्रेषित करें।

Sd/-
(अरूण कुमार गुप्ता)
निदेशक
समेकित बाल विकास सेवाएं,
राज. जयपुर।

क्रमांक ए.11(3)पो/मबावि/2003/65958-961 जयपुर, दिनांकः 31.7.14

प्रतिलिपि :–सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है–

1. निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, झालाना डूंगरी, जयपुर।
2. निदेशक, आकाशवाणी, एम.आई. रोड, जयपुर।
3. राज्य प्रतिनिधि, यूनीसेफ, बी–9, नेहरू सहकार भवन के साम्ने, भवानीसिंह मार्ग, सी–स्कीम, जयपुर।
4. प्रभारी अधिकारी कम्प्यूटर शाखा को विभागीय बेवसाइट पर अपलोड करने हेतु।

(आर.एस.मीणा)
अतिरिक्त निदेशक (पोषाहार)

Directorate of Integrated Child Development Services, 2, Jal Path, Gandhi Nagar, Jaipur- 302015
Ph. No.0141- 2700246, fax 0141-2705638, 2700281 e-mail - adn.wcd@rajasthan.gov.in
Web-Site www.wcd.rajasthan.gov.in